चित्रकूट

चातक

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक—
बाबूलाल गुप्त
कृष्णा प्रकाशन
२००, बड़ा बाजार, झाँसी

प्रथमावृत्ति
एक रुपया पचास पैसे

मुद्रक—
जनता प्रेस सदर बाजार, झांसी।

Scanned with OKEN Scanner

धन्यस्त्वं न त्वया तुल्यं पश्यतामि जगतीतले ।
अयत्नादागतं राज्यं यस्त्वं त्यक्तुमिहेच्छसि ।।

भूशायी ब्रह्मचारी जटावल्कलसंवृतः ।
कृशाङ्गयष्टिदुःखार्तः कुर्वन्रामकथां मुहुः ।।
यवान्नमपि नो भुङ्क्ते जलं पिबति नो मुहुः ।

भरत रहनि समुझनि करतूती ।
भगति बिरति गुन बिमल बिभूती ।।
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं ।
सेस गनेस गिरा गमु नाहीं ।।

उठ, भाई, तुल सका न तुझसे, राम खड़ा है,
तेरा पकड़ा बड़ा भूमि पर आज पड़ा है !

वैदेही से वधू ऊर्मिला कर्त्तव्य —स्पर्द्धा में ज्येष्ठ,
रामचंद्र के चारु वृत्त से भरत, चरित्र तुम्हारा श्रेष्ठ !

प्रस्तुत प्रकाशन—

चित्रकूट

(मोहनलाल गुप्त 'चातक')

आगामी प्रकाशन—

प्रेम गीत

प्रकाशक—

बाबूलाल गुप्त

कृष्णा प्रकाशन

झाँसी ।

(जनता प्रेस, झांसी)